मिशन शिक्षण संवाद की
मासिक पत्रिका

शिक्षण संवाद

वर्ष-३ अंक-८

माह : फ़रवरी २०२१

मिशन

शिक्षण

संवाद

शिक्षा का उत्थान,
मिशन शिक्षण संवाद
शिक्षक का सम्मान।

शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका

वर्ष-३
अंक-८

माह- फ़रवरी २०२१

प्रधान सम्पादक
श्री विमल कुमार

प्रबन्ध सम्पादक
श्री अवनीन्द्र सिंह जादौन
प्रांजल सक्सेना

सम्पादक
ज्योति कुमारी
आनन्द मिश्रा

सह सम्पादक
डॉ0 अनीता मुद्गल
आशीष शुक्ल

छायांकन
वीरेन्द्र परनामी

ग्राफिक एवं डिजाइन
आनन्द मिश्र, अफ़ज़ाल अहमद

विशेष सहयोगी
शिवम सिंह, दीपनारायण मिश्र

आओ हाथ से हाथ मिलाएं
बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं

मिशन
शिक्षण
संवाद

व्हाट्सएप एवं सम्पर्क नं0
9458278429

ई मेल :
shikshansamvad@gmail.com

वेबसाइट :
www.missionshikshansamvad.com

शुभकामना सन्देश

मिशन शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के सकारात्मक परिवर्तन के जनक के रूप में जाना जाता है। इसकी स्थापना आदरणीय विमल कुमार जी द्वारा उस समय की गई जब बेसिक शिक्षा व यहाँ कार्यरत शिक्षकों को लोग इस रूप में देखते थे जैसे शिक्षक कोई कार्य ही ना करते हों। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा शिक्षकों को एक नई पहचान मिली। इससे जुड़े शिक्षक बेसिक शिक्षा की अच्छाइयों व अच्छे कार्यों को लोगों के बीच में रखना प्रारंभ किए। धीरे–धीरे मिशन द्वारा यह कार्य आम जनमानस तक पहुँचने लगा और शासन स्तर पर भी इसके कार्यों को सराहना मिलने लगी।

मिशन शिक्षण संवाद शिक्षा के उत्थान हेतु धीरे–धीरे अपना कार्यक्षेत्र बढ़ाता गया। वर्तमान समय में उत्तर प्रदेश के साथ–साथ अन्य प्रदेशों में भी यह सकारात्मक कार्य कर रहा है। इसके द्वारा प्रेषित श्यामपट्ट कार्य व वर्कशीट बच्चों के लिए काफी उपयोगी सिद्ध हो रही है। वर्तमान समय में जब विद्यालय बच्चों के लिए बंद हैं तो ऑनलाइन शिक्षण हेतु भी विद्यालयों को शैक्षिक सामग्री मिशन शिक्षण संवाद की टीम द्वारा उपलब्ध कराया जा रहा है। मिशन शिक्षण संवाद के यूटयूब चैनल व फेसबुक पेज पर इसके फालोवरों की संख्या से इसकी लोकप्रियता का पता चलता है। वर्तमान समय में शैक्षिक गतिविधियों को साझा करने हेतु इसकी टेक्निकल टीम द्वारा तरह–तरह के प्लेटफार्मों का प्रयोग जा रहा है। मिशन शिक्षण संवाद द्वारा प्रेषित सुविचार व प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी हेतु प्रेषित सामग्री बच्चों के लिए काफी लाभकारी सिद्ध हो रही है।

मिशन शिक्षण संवाद द्वारा ऑनलाइन प्रकाशित होने वाली प्रत्येक माह की पत्रिका के स्तंभ काफी प्रभावशाली होते हैं। मैं दिन –रात मेहनत करने वाले इस टीम के सदस्यों के कार्यों को नमन करता हूं एवं इस प्रकार के कार्य हेतु मिशन शिक्षण संवाद की पूरी टीम को शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

रविंद्र कुमार सिंह,
राज्य पुरस्कार प्राप्त शिक्षक,
जनपद : वाराणसी।

सम्पादकीय

प्रकृति की सृष्टि में वृद्धि का एक मात्र कारण बीज है। जो सम्पूर्ण सृष्टि के जीवन चक्र का आधार है। सृष्टि में विविध प्रकार के बीज हैं जिनके बोने से अर्थात फैलाने से उसी तरह के बीजों की गुणात्मक वृद्धि होती है। जो उस बीज के भविष्य का अस्तित्व निर्धारित करता है।

ठीक इसी प्रकार मानवीय सृष्टि को दिशा देने एवं उसकी दशा बदलने का मुख्य आधार है विचार बीज। इस विचार बीज को आप जैसा बोयेंगे अथवा फैलायेंगे, ठीक उसी तरह के विचारों की गुणात्मक वृद्धि सृष्टि और मानवीय सभ्यता में दिखाई देगा। यदि हम सब सकारात्मक विचारों के बीजों को अधिक क्षेत्रफल में बोयेंगे तो हम सभी को सकारात्मक विचारों की फसल अधिक प्राप्त होगी और यदि नकारात्मक विचारों के बीज बोयेंगे तो निश्चित ही नकारात्मक विचारों की फसल ही हम सभी को काटने को मिलेगी।

इसीलिए मिशन शिक्षण संवाद परिवार का सदैव प्रयास रहा है कि वह सकारात्मक विचारों का बीज विभिन्न माध्यमों से सतत जन–जन तक पहुँचाने की सेवा का कार्य करता रहे। इसी विचार बीज के रूप में आपके सामने मिशन शिक्षण संवाद परिवार की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद का यह वर्तमान अंक आपके सामने प्रस्तुत है आशा है आप सभी सहयोगी सकारात्मक विचारों को सीखने–सिखाने और फैलाने में सहयोग कर समाज में सकारात्मक विचारों के बीज वंश में गुणात्मक वृद्धि करने वाले सहयोगी बनेंगे।

आप सभी का सहयोग के लिए बहुत–बहुत आभार।

आपका

विमल कुमार

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ सं०
मिशन गीत	1
अनमोल रत्न	2
विचारशक्ति–1	4
विचारशक्ति–2	6
बात महिला शिक्षकों की	8
के0जी0बी0वी योजना	9
बाल कविता–1	10
बाल कविता–2	11
टी.एल.एम.संसार	12
English Medium Diary	13
प्रेरक प्रसंग	14
बाल साहित्य	15
बाल कहानी	16
बाल जिज्ञासा	17
खेल विशेष	18
योग विशेष	20
शिक्षण तकनीक	22
सदविचार	23
नवाचार	25
गतिविधि	26

मिशन गीत

शिक्षा का अनमोल खजाना,
जीवन को शिक्षा से महकाना।।

मिशन शिक्षण संवाद

दीपमाला शाक्य ''दीप''
शिक्षा मित्र,
प्राथमिक विद्यालय कल्यानपुर,
विकास खण्ड–छिबरामऊ,
जनपद–कन्नौज।

शिक्षा बिना जीवन बेकार,
शिक्षा का कर लो श्रंगार।।

शिक्षा का 'दीप' जलाना है,
रोशन ये जग कर जाना है।।

शिक्षा सागर बहे जहाँ,
नैतिकता महके है वहाँ।।

शिक्षा एक हथियार बड़ा,
मुश्किल करता पार सदा।।

बिन शिक्षा जीवन अंधकार,
शिक्षा का कर लो उद्गार।।

शिक्षा एक सजग सवेरा है,
रोशन शिक्षा से जग सारा है।।

शिक्षा का गहना है अनमोल,
पढ़ लो बहना न इसका है मोल।।

शिक्षा का पेड़ लगाओगे,
फल साक्षरता का पाओगे।।

चुरा सके न कोई चोर,
शिक्षा हीरा पहनो चहुँओर।।

शिक्षा का है मिलकर दान करो,
पढ़ो पढ़ाओ शिक्षा का ध्यान करो।।

बेटा– बेटी सभी पढ़ाओ,
शिक्षा से जग में नाम बढ़ाओ।।

सबसे बड़ा दान है शिक्षा,
बाटन से बढ़ जाती है शिक्षा।।

बेसिक शिक्षा के अनमोल रतन

माह के अनमोल रत्नों को नमन

४६७ नमिता सुयाल रा०उ०प्रा०वि० इलाइजर, ओखलकांडा, नैनीताल, उत्तराखण्ड
https:@@shikshansamvad-blogspot-com@2021@01@blog&post&38-html

४६८ किरण गोदारा राजकीय प्राथमिक विद्यालय नाहरसिंह मौहल्ला, लालमदेसर (मगरा)

बीकानेर, राजस्थान
https:@@shikshansamvad-blogspot-com@2021@01@blog&post&8-html

४६६ राखी सोनी (प्र०अ०) प्राथमिक विद्यालय न्यूरिया, ब्लॉक– कबरई, जनपद– महोबा,

राज्य– उत्तर प्रदेश
https:@@shikshansamvad-blogspot-com@2021@01@blog&post&11-html

५०० पुष्पा अग्रवाल, पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोपीगंज, ब्लाक– औराई, जनपद–भदोही,

उत्तर प्रदेश
https:@@shikshansamvad-blogspot-com@2021@01@blog&post&13-html

५०१ डॉ० शिखा अग्रवाल प्राइमरी विद्यालय कलारी बिथरी चौनपुर, जनपद– बरेली
https:@@shikshansamvad-blogspot-com@2021@01@blog&post&30-html

विचारशक्ति–1

प्राथमिक शिक्षा में चुनौतियाँ एवं सम्भानाएँ

शिक्षण संवाद

प्राथमिक शिक्षा मनुष्य के जीवन की आधारशिला होती है। इसके बिना व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास सम्भव नहीं है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए प्राचीनकाल में गुरुकुलों में इसपर विशेष बल दिया जाता था। वैदिक युग में शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास था। इसलिए बताया गया कि, ''स विद्या या विमुक्तये।'' अर्थात विद्या वह है जो हमें संसार के भवसागर से मुक्ति प्रदान करे। बच्चों में न केवल बौद्धिक विकास किया जाता था अपितु उनके अन्दर चरित्र, नैतिक, सामाजिक सहयोग की भावना, त्याग की भावना तथा परिश्रम के महत्व को भी सिखाया जाता था। इसलिए बच्चा जब गुरुकुल से निकलता था तो वह जीवन के हर क्षेत्र का व्यवहारिक ज्ञान रखता था तथा समाज में अपना सर्वोत्तम योगदान देता था। परन्तु जैसे–जैसे समाज विकसित होता गया। शिक्षा के अर्थ तथा उद्देश्य दोनों बदलते गए।

आधुनिक युग में शिक्षा का अर्थ रोजगार परक शिक्षा से है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति को आजीविका के लिए तैयार कर सके। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भी रोजगारपरक शिक्षा की वकालत की है। जैसे–जैसे विज्ञान विकसित हुआ वैसे–वैसे शिक्षा के क्षेत्र में नित्य नए–नए अनुसन्धान तथा प्रयोग हुए हैं। ''शाला पूर्व शिक्षा'' इसी की कड़ी में विकसित होने वाली पद्धति है। आँगनबाड़ी कार्यकत्रियों को प्रशिक्षित किया जाना ''शाला पूर्व'' शिक्षा को सशक्त करने की दिशा में उठाया गया महत्वपूर्ण कदम है।

आज से लगभग 70–80 वर्ष पूर्व अर्थात 1950 अथवा 60 के दशक में वापस जाएँ तो हम पायेंगे कि हमारे देश की प्राथमिक शिक्षा काफ़ी मज़बूत हुआ करती थी। हमारे देश के सर्वोच्च संस्थानों में सेवा देने वाले लोग इन्हीं विद्यालयों से निकलते थे। इनके भीतर अपने गुरुओं के प्रति अटूट श्रद्धा होती थी। गुरु शिष्य सम्बन्ध काफ़ी मज़बूत हुआ करता था। गुरु अपने घर पर अथवा स्कूल में ही बुलाकर रास्ते में भी बच्चों को शिक्षा दिया करते थे जो कि गुरुकुल प्रणाली का ही अनुसरण था। परन्तु जैसे–जैसे शिक्षा का बाजारीकरण होता गया शिक्षा का अर्थ एवं उद्देश्य दोनों बदलता गया। शिक्षा का उद्देश्य मात्र धनार्जन तक सीमित हो गया। देखते–देखते निज़ी विद्यालयों की बाढ़ सी आ गयी है। परिणामस्वरूप शिक्षा का उद्देश्य जो व्यक्ति के सम्पूर्ण विकास पर केन्द्रित था, वह कमज़ोर होने लगा। अधिकांश निज़ी विद्यालय भौतिक संसाधनों एवं उच्च गुणवत्तापरक शिक्षा का झाँसा देकर आर्थिक दोहन का केन्द्र बन गए। शैक्षणिक व्यवस्था को कमज़ोर करने में राजनैतिक व्यवस्था का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। इस सच से इनकार नहीं किया जा सकता। अध्यापकों की संख्या का घोर अभाव भौतिक संसाधनों से हीन विद्यालय, शिक्षकों से शिक्षण कार्य से इतर अन्य कार्य लिए जाने से जनमानस सरकारी विद्यालयों के प्रति एक नकारात्मक दृष्टिकोण विकसित हुआ। इसके फलस्वरूप सरकारी प्राथमिक विद्यालयों से छात्रों का पलायन देखने को मिलने लगा तथा प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता में भारी गिरावट आयी है।

वर्तमान सरकार ने प्राथमिक शिक्षा की गम्भीरता को समझते हुए इसे सुदृढ़ करने का बहुत ही सकारात्मक प्रयास किया है। जिसमें विद्यालयों का कायाकल्प, मिशन प्रेरणा का कार्यक्रम ''प्रेरणा ज्ञानोत्सव'' कार्यक्रम तथा बड़े पैमाने पर नवीन शिक्षकों की नियुक्ति शामिल है। विभिन्न प्रकार के शोधों से यह प्रमाणित होता है कि बच्चों के सीखने की क्षमता उनके वातावरण से सीधे प्रभावित होती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए सबसे पहले परिषदीय विद्यालयों के भौतिक वातावरण में काफ़ी सुधार किया गया है। आज हमारे विद्यालय सुविधाओं के मामले में निज़ी विद्यालयों से कहीं बेहतर स्थिति में हैं। विद्यालयों में टाइलीकरण, स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था, स्वच्छ शौचालय, स्वच्छ कमरे, विद्यालय में विद्युतीकरण की व्यवस्था, प्रत्येक कमरे में पंखे, बाला पेन्टिंग, प्रिंट रिच कक्षा कक्ष की दीवारें, प्राकृतिक वातावरण से आच्छादित विद्यालय परिसर, किचेन गार्डेन जहाँ सीखने के वातावरण को रोचक बना रहे हैं, वहीं पर नवनियुक्त शिक्षकों के आ जाने से बच्चों की शैक्षणिक गुणवत्ता में काफ़ी सुधार होगा। वर्तमान समय युवा शिक्षकों के लिए एक अवसर लेकर आया है जहाँ पर वे अपनी स्वतन्त्र पहचान बना सकते हैं।

(परिषदीय विद्यालय के बच्चों को उच्च गुणवत्तापरक शिक्षा देने में जहाँ आम अभिभावकों का बहुत अधिक शिक्षित न होना प्रमुख चुनौती है, वहीं पर भैतिक संसाधनों से सम्पन्न विद्यालयों का आकर्षक प्राकृतिक वातावरण, प्रिन्ट रिच कक्षाएँ, स्मार्ट कक्षा कक्ष, साउंड सिस्टम, स्मार्ट टीवी, डिजिटल मोबाइल का प्रयोग करके उच्च कोटि की गुणवत्तापरक शिक्षा देकर समाज में अपना गौरव स्थापित करने का अवसर भी है। हम आचार्य चाणक्य के सूत्र वाक्य– ''प्रलय और सृजन शिक्षक की गोद में खेलते हैं।'' को चरितार्थ कर सकते हैं।) आज भी हमारे प्रदेश की जनसंख्या का बड़ा भाग परिषदीय विद्यालयों से लाभान्वित होता है। इस सत्य से इनकार नहीं किया जा सकता है। हमारे विद्यालय में ऐसे बहुत से शिक्षक हैं जो पूरी निष्ठा और ईमानदारी के साथ शिक्षण कार्य कर रहे हैं तथा समाज में अपना विशेष योगदान रखते हैं। हमारे शिक्षक अपने कार्यों का प्रचार प्रसार नही करते हैं। परिणामस्वरूप उसका सकारात्मक पहलू उभरकर समाज में नहीं आ पाता है परन्तु अब समय आ गया है जब शिक्षक को समाज का नेतृत्व लेना होगा और सशक्त राष्ट्र के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देना होगा। शासन की मंशा के अनुरूप ''नेतृत्व विकास'' पर केन्द्रित यूट्यूब सेशन तथा प्रशिक्षण संचालित किए जा रहे हैं जिससे उनके भीतर नेतृत्व का गुण विकसित हो और वे समाज को एक नई दिशा दे सकें। वर्तमान समय में संचालित होने वाला ''मिशन प्रेरणा'' कार्यक्रम प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता संवर्धन में ''मील का पत्थर'' साबित होगा। इस कार्यक्रम के माध्यम से जहाँ कक्षा एक से लेकर कक्षा 5 तक हर एक कक्षा की भाषा एवं गणित की दक्षताएँ निर्धारित की गई हैं, वहीं पर इन दक्षताओं को प्राप्त किस करेंगे ? इसके लिए भी क्रमिक रूप से रोडमैप बना लिया गया है। इस कार्यक्रम के तहत शिक्षकों को नियमित रूप से प्रशिक्षण भी दिए जा रहे हैं। जिससे वे अपनी क्षमता का संवर्धन करके बच्चों की शैक्षिणक गुणवत्ता को नई दिशा देंगे। यह समय हम सभी शिक्षक साथियों के लिए महान अवसर लेकर आया है जिसमें हम बेसिक शिक्षा परिषद में आमूल चूल परिवर्तन कर सकते हैं।

अरविन्द कुमार,
एआरपी,
विकास क्षेत्र– डुमरियागंज,
जनपद– सिद्धार्थनगर।

इक इमारत बनानी है

शिक्षण संवाद

इक इमारत बनानी है
कुछ ईंटें बिछानी हैं
नींव हो मजबूत
ये मन में ठानी है

शिक्षक होना कोई छोटी–मोटी बात नहीं है। ये बुनियादों का सवाल है। ये गढ़ी जाने वाली नई इमारतों की कहानी है। उन इमारतों की कहानी जिनकी नींव एक शिक्षक रखता है। एक शैक्षणिक, सुसंस्कृत, सभ्य समाज का सवाल है। ये नैतिक व मानवीय मूल्यों से साक्षात्कार है। ये एक सम्पूर्ण जीवन का सार है। शिक्षक वो कहानीकार है।

प्रश्न ये है कि एक सामाजिक शिल्पकार का समाज में वो सम्मान क्यों नहीं है जिसका वो हकदार है? विशेष रुप से जब हम परिषदीय शिक्षकों की बात करें तो वो समाज के एक ऐसे वर्ग को शिक्षित कर रहा है जो अपनी दैनिक जरूरतों को पूरा करने में इतना व्यस्त है कि अपनी उन्नति का रास्ता ही नही खोज पा रहा है। इन विषम परिस्थितियों में धैर्य व सहनशीलता के साथ शिक्षण कार्य आसान नहीं है।

'मिशन शिक्षण संवाद' के द्वारा किये जा रहे प्रयासों को देखकर हृदय आह्लादित हो जाता है कि शिक्षक न केवल विद्यार्थियों अपितु उनके अभिभावकों को भी जागरूक करने का प्रयास कर रहा है। 'मिशन शिक्षण संवाद' शिक्षकों व छात्रों दोनों को ही प्रेरित करने का कार्य कर रहा है। महामारी के समय में किये गए समस्त प्रयासों की जितनी सराहना की जाए कम है। विषम परिस्थितियों में भी शिक्षक समाज व स्वयं के प्रति अपने कर्तव्यों व उत्तरदायित्वों का निर्वहन करने में कितना सक्षम है वर्तमान में ये दर्शाता है।

अत्यंत हर्ष का विषय है कि शिक्षकों के द्वारा किये जा रहे अथक प्रयासों को दर्शाती शैक्षिक पत्रिका का प्रतिमाह प्रकाशन किया जा रहा है। 'मिशन शिक्षण संवाद' के प्रयासों द्वारा ही आज शिक्षक स्वयं के द्वारा किये जा रहे कार्यों के प्रति सम्मान को पाने में भी सक्षम है। मैं आशान्वित हूँ, सकारात्मक हूँ। मैं आगामी अंक के लिए हृदय से शुभकामनाएँ प्रेषित करती हूँ।

अंत में मेरी कुछ पंक्तियाँ 'मिशन
शिक्षण संवाद' व मेरे सभी शिक्षक साथियों को समर्पित....

छोटी–मोटी बात नहीं ये
बुनियादों का सवाल है
आओ मिलकर करें पूर्ण प्रयास अब
रह ना जाये कोई मलाल अब
गढ़ लें आओ नई इमारत
रह ना जाये कोई इबारत
ज्ञानोत्सव का करें प्रसार
प्रसार हो, प्रयास हो
सभी का यूँ उद्धार हो
कि जीवन ही शिक्षार्थ हो
आओ कर लें, हम ये प्रण
ज्ञानोत्सव के रण में हैं हम
अब यदि रण में हैं हम
ता` जीत ही हा`
थकें नहीं हम, हार ना हो
नव–निर्माणों का हो सुदृढ़ आकार
'मिशन शिक्षण संवाद' की
बस यही पुकार, बस यही पुकार...

अंशू सिंह,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भिक्कनपुर,
विकास खण्ड– रज़ापुर,
जनपद– ग़ाज़ियाबाद।

बात महिला शिक्षकों की

महिला सशक्तीकरण

शिक्षण संवाद

महिला शिक्षकों को घर नौकरी घर व्यवस्थित करने में आने वाली कठिनाइयाँ– मैं पुष्पा अग्रवाल इंचार्ज प्रधानाध्यापक पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोपीगंज विकासखंड औराई जनपद भदोही में एक महिला शिक्षक हूँ। मैंने 2000 –2002 बैच में बीटीसी ट्रेनिंग की तथा मेरी प्रथम नियुक्ति 18 सितंबर 2002 को प्राथमिक विद्यालय धनापुर डीघ ब्लॉक में हुई तब मेरे दोनों बच्चे छोटे–छोटे थे, एक को गोद में लेकर तथा दूसरे का हाथ पकड़ कर ले जाती थी। दोनों बच्चों को तैयार करना उनका टिफिन तैयार करना तथा उनको साथ में लेकर समय से स्कूल पहुँचना काफी चुनौतीपूर्ण था। मेरे पति एक बिजनेसमैन हैं बिजनेस तथा नौकरी का एक साथ सामंजस्य बिठाना काफी चुनौतीपूर्ण था, उससे भी बड़ी चुनौती मेरे लिए थी कि मैं एक संयुक्त परिवार में रहती हूँ। मेरे सास–ससुर पुराने विचारों वाले लोग थे, हमारे परिवार में लड़के तक नौकरी नहीं करते थे बहू तो बहुत दूर की बात है। परंतु मैंने अपने पति के सहयोग से असंभव को संभव करके दिखाया आज मेरे परिवार में, लड़कियाँ तथा बहुएँ काफी संख्या में नौकरी कर रही हैं। इसी प्रकार विद्यालय में जहाँ–जहाँ मेरी नियुक्ति हुई इंचार्ज के पद पर ही हुई और मुझे एकल विद्यालय ही मिला कभी भी मुझे स्टाफ का सहयोग नहीं मिला, यह मेरा दुर्भाग्य है परंतु एक सौभाग्य की बात है कि मुझे बच्चों का सहयोग बहुत मिलता है और यह बच्चे ही मेरी वानर सेना हैं। इनके साथ मैं बहुत कुछ कर सकती हूँ और करती भी हूँ। मेरी प्रथम नियुक्ति प्राथमिक विद्यालय धनापुर डीघ में हुई एवं स्थानांतरण प्राथमिक विद्यालय काली महाल ज्ञानपुर तथा प्रमोशन पूर्व माध्यमिक विद्यालय वैदा ज्ञानपुर ब्लॉक एवं स्थानांतरण नवीन विद्यालय पूर्व माध्यमिक विद्यालय जगापुर ज्ञानपुर ब्लॉक में हुआ तत्पश्चात मेरा स्थानांतरण पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोपीगंज विकासखंड औराई जोकि मेरा वर्तमान विद्यालय है। मैंने प्रत्येक विद्यालय में काफी चुनौतियों का सामना करके नामांकन बढ़ाया। बच्चों एवं अभिभावकों की सोच बदली तथा हर परिस्थिति का डटकर मुकाबला किया। मेरे वर्तमान विद्यालय में जब मेरी नियुक्ति हुई 2014 में हुई तब यहाँ 66 बच्चे थे। अब तक के सफर में 128 बच्चे नामांकित हैं तथा मेरे विद्यालय का भौतिक परिवेश काफी आकर्षक है। मैंने अपने विद्यालय को ट्रेन के मॉडल का लुक दिया है बच्चे बहुत खुश हैं तथा बच्चे विद्यालय में अपने आप को बहुत सहज महसूस करते हैं हम सब मिलजुल कर एक परिवार की तरह रहते हैं।

पुष्पा अग्रवाल,
इंचार्ज प्रधानाध्यापक,
पूर्व माध्यमिक विद्यालय गोपीगंज,
विकास खण्ड–औराई,
जनपद–भदोही

कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय योजना

एक परिचय

भारत सरकार ने 2004 में भारतवर्ष के पिछड़े इलाकों और गाँवों में निवास करने वाली अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग एवं गरीबी रेखा के नीचे गुजर बसर करने वाले परिवारों की बालिकाओं को शिक्षित करने के लिए इस योजना का प्रारम्भ किया।

इस विचार का सूत्रपात तब हुआ जब 2001 की जनगणना के अनुसार यह तथ्य उजागर हुआ कि देश की 49.46 करोड़ की महिला आबादी में से सिर्फ़ 53.67 प्रतिशत महिलाएँ ही साक्षर थीं अर्थात लगभग 22.91 करोड़ महिलाएँ निरक्षर पायी गयीं।

इस निरक्षरता का दानव देश में अधिक मातृत्व व शिशु मृत्युदर, निम्न पोषण स्तर, न्यून आय अर्जन व परिवार में स्वायतता का ह्रास पैदा करता है।

उद्देश्य –

1– ऐसी बालिकाएँ जो 10 वर्ष की आयु से अधिक हैं और विद्यालय से बाहर हैं उन पर ध्यान देना।
2– सभी बालिकाओं को मुफ़्त शिक्षा देना।
3– सभी बालिकाओं को आवास उपलब्ध कराना।
4– पुस्तकें, शिक्षण सामग्री, यूनिफ़ार्म, स्वेटर, जूते–मोजे व दैनिक उपयोग की वस्तुएँ मुफ़्त में देना।
5– आवासीय विद्यालय के माध्यम से गुणवत्ता युक्त प्रारम्भिक शिक्षा उपलब्ध कराना।
6– घुमंतू जातियों तथा परिवारों की बालिकाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित करना।
7– अभिभावकों को नामांकन हेतु प्रेरित करना।
8– प्रति माह 100 रुपये बालिकाओं के व्यक्तिगत खातों में जमा कराया जाना।

विशेषताएँ –

इस योजना में केन्द्र व राज्य सरकार क्रमशः 75% व 25% राशि का योगदान करेंगी।

आरक्षण की दृष्टि से 75% सीटें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, पिछड़ा वर्ग व अल्पसंख्यक श्रेणी हेतु तथा 25% सीटें गरीबी रेखा के नीचे जीवन यापन करने वाले परिवारों की बालिकाओं के लिए आरक्षित होंगी।

फ़िलहाल यह योजना कक्षा 6 से 8 तक ही संचालित है।

भविष्य में इस योजना का विस्तार कक्षा 12 तक किये जाने का विचार है।

यह योजना सफ़लतापूर्वक संचालित हो रही है जिसके परिणामस्वरूप बालिकाओं के रहन–सहन और सोच–विचार में सकारात्मक बदलाव परिलक्षित हो रहा है।

आशा है कि इस योजना के फलस्वरूप हिन्दुस्तान की एक बड़ी और महत्वपूर्ण आबादी निश्चय ही लाभ उठाकर शिक्षित, संस्कारी, आत्मनिर्भर व आत्मसम्मान से लबरेज़ होगी

डा0 श्रद्धा अवस्थी,
सहायक अध्यापक,
कम्पोज़िट विद्यालय सनगाँव,
विकास खण्ड–हसवा, जनपद–फ़तेहपुर।

बाल कविता-1

शिक्षण संवाद

छुपन छुपाई

छुपन छुपाई और कहें आइस पाइस,
बच्चों के खेल खेलने की रहती ख्वाहिश।
बचपन से जानते, खेल चोर सिपाही,
ऐसे खोजबीन कर्ता की पैदाइश।।

एक सिपाही ढूँढे बाकी सारे चोर,
खोज कर मिल जाते कि करते हैं शोर।
कब से छुपते छुपाते, बचते बचाते, बच्चों की गति, अंधेरे
से प्रकाश की ओर।।

सजग और सावधान, होता मनोरंजन,
आपसी दोस्त, शरारत कर लेते रंजन।
गजब उमंग, तन मन में भर जाती स्फूर्ति,
क्रीड़ा लुका छुपी, उर में आवेग स्पंदन।।

प्रायोगिक जीवन भर, आँख मिचौली योग,
रोमांचित कर देने वाला यह प्रयोग।
हर उम्र के, खेल से रहते ना वंचित,
कि सीखने सिखाने में, करता सहयोग।।

ऋषि कुमार दीक्षित
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय भटियार,
विकास क्षेत्र– निधौली कलां, जनपद– एटा।

बाल कविता–2

Fun Learning Opposites

Go माने जाना Come माने आना,
रोज़ सवेरे पढ़ने जाना

Take माने लेना Give माने देना,
मिलजुल कर हरदम तुम रहना

Here माने यहाँ There माने वहाँ,
कचरा न फेंको यहाँ वहाँ

Up माने ऊपर Down माने नीचे,
पौधों को सब मिलकर सींचें,

Near माने पास Far माने दूर,
पानी खूब पियो भरपूर,

White माने सफेद Black माने काला,
निडर बनो और हिम्मतवाला,

Day माने दिन Night माने रात,
बड़ों की हरदम मानो बात,

Sad माने दुःखी Happy माने खुश
रखो सबको हरदम खुश।।

खुशबू गुप्ता,
सहायक अध्यापिका,
प्राथमिक विद्यालय भदोई,
विकास खण्ड–सरोजनीनगर,
जनपद–लखनऊ।

अल्फाबेट हाउस

शिक्षण संवाद

आवश्यक सामग्री– गत्ता, लकड़ी के चम्मच, फेविकोल, रंगीन कागज़, कैंची, मार्कर।

निर्माण विधि– रंगीन कागज़ को कटिंग करके घर के दरवाज़े व खिड़कियों को बनाते हैं। ब्लैक मार्कर से अल्फाबेट हाउस की डिज़ाइन बनाते हैं तथा उसमें खिड़की व दरवाज़े लगाते हैं। लकड़ी की चम्मचों से अल्फाबेट्स बनाते हैं और घर की खिड़कियों में खड़ा करते हैं।

टीएलएम के लाभ– 1. इस टीएलएम से बच्चे अल्फाबेट्स को अच्छे से समझ सकते हैं।
2. टीएलएम से वावेल्स और कॉन्सोनेंट को अलग रखकर शो कर सकते हैं।
3. टीएलएम वर्ड फॉर्मेशन में अत्यधिक लाभकारी है।

शोभना,
सहायक शिक्षिका,
कम्पोजिट विद्यालय उमाही राजपूत,
विकास खण्ड– नानौता,
जनपद– सहारनपुर।

English Medium Diary

English better called "Global language" is second most used language not only in India but many countries all over the world as a mode of communication. It has its usage in education, science ,business ,entertainment, technology and even in sports. Moving towards importance of English as an international and foreign language and why it is important to learn English and educate our coming generation in English medium. Language is a primary source of communication it is a method through which we share our ideas and thoughts with others. Out of all spoken languages English is most commonly spoken all over the world .Our motto to educate our children is that they stand on their own with their heads high not only in our country but wherever they go in the world .Among 400 Billion native speakers English is understood or spoken by one to 1.6 billion people so to sustain worldwide English medium is must .

English is easy to learn. It has simple vocabulary so no student will face any difficulty to understand it.It is the language of internet most of the content produced on the internet is an English so by knowing and understanding English we can explore the world through internet.

Keeping the above mentioned features of English and also the increasing demand of modern day parents to teach their kids in English medium ,In 2015 the basic education department had converted a few primary schools of Uttar Pradesh into English medium institutions and further in 2017 basic education minister opened over 5000 English medium primary schools assessing their popularity among students but not just converting schools into English medium would work, we will have to take a step forward into training teachers in English and providing schools with modern facilities like computers, projectors, disciplined activity areas and sports facilities which will not only train students in English but also in technology and help them go along with this modern world.

Archana Arora, Principal,
Primary School Barethar Khurd,
Block-Khajuha, District-Fatehpur.

प्रेरक प्रसंग

मोरारजी देसाई

शिक्षण संवाद

किसी–किसी का जीवन हमको इतना प्रेरित कर जाता है कि हम भी उसके जीवन से प्रेरणा लेते हुए अपनी जीवनशैली को उसके अनुसार ही ढाल लेते हैं और उसको अपना आदर्श मानते हुए अपने व्यक्तित्व को उसके अनुसार ही आकार प्रदान करते हैं कुछ ऐसे ही भारत के चौथे प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई थे इनका कार्यकाल इंदिरा जी के बाद शुरू हुआ। इनका जन्म 29 फरवरी 1896 में भदेली गाँव के वलसाद जिले में हुआ था। इनका शुरुआती परिवारिक जीवन बहुत ही कठिनाइयों से गुजरा इनके पिताजी ने आत्महत्या कर ली थी जिस बात से देसाई जी बहुत परेशान हुए यह समय उनके लिए बहुत कठिन था परंतु हालात के आगे कमजोर नहीं हुए अपितु ज्यादा मजबूत हो गए।

जीवन का प्रेरक प्रसंग तब का है जब 1930 में भारत में महात्मा गांधी द्वारा शुरू किया गया आजादी के लिए संघर्ष अपने मध्य में था। श्री देसाई का ब्रिटिश न्याय व्यवस्था में विश्वास खो चुका था इसीलिए उन्होंने सरकारी नौकरी छोड़कर आजादी की लड़ाई में भाग लेने का निश्चय किया यह एक कठिन निर्णय था उन्होंने यह नौकरी बहुत ही कड़ी मेहनत से प्राप्त की थी और परिवार को चलाने वाले यह अकेले ही थे। उनके ऊपर अपनी सभी आठ छोटे भाई–बहनों की जिम्मेदारी थी पर जिम्मेदारी के ऊपर देश प्रेम देश को आजाद कराने की भावना प्रबल रही मोरारजी देसाई ने महसूस किया कि यह देश की आजादी का सवाल था परिवार से संबंधित समस्याएँ बाद में आती हैं। देश पहले आता है ऐसे मजबूत इरादे वाले विषम परिस्थितियों में भी अपने निर्णय पर अडिग रहने वाले हमारे चौथे प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई को शत–शत नमन

इला सिंह,
सहायक अध्यापक,
कम्पोजिट विद्यालय पनेरूवा,
विकास खण्ड–अमौली,
जनपद–फतेहपुर।

संस्कार विहीन बालक

शिक्षण संवाद

आज समय बहुत तेजी से बदल रहा है जिसका सर्वाधिक प्रभाव हमारे बच्चों पर है। कुछ लोगों का तो यहाँ तक मानना है कि आज का बालक संस्कार विहीन हो गया है। पर इस बात में कितनी सच्चाई है, सर्वप्रथम हमें इस बात पर गहनता से मंथन करना होगा। हमारे बच्चों को संस्कार विहीन कौन कर रहा है? क्या हम उन्हें धर्म–कर्म साहित्य की शिक्षा दे रहे हैं? क्या हम उन्हें हमारे साहित्य से परिचित करा पा रहे हैं? क्या हम उन्हें राम, कृष्ण, गांधी, गौतम या फिर किसी अन्य महापुरुष की जीवनचर्या से परिचित करा पा रहे हैं? क्या हम उन्हें उस बालक श्रवण कुमार के बारे में बताते हैं जिसने अपने अंधे माता–पिता को अपने कंधों पर बैठाकर तीर्थ भ्रमण कराया था? क्या हम राजा हरिश्चंद्र की सत्यनिष्ठा और कर्ण की दानवीरता अपने बच्चो को बताते हैं? शायद नहीं!

बच्चों को भावनाशून्य करने में संस्कार विहीन करने में हम भी पीछे नही है हमें अपने बच्चों को संस्कारी बनाने हेतु उन्हें अपने साहित्य से परिचित कराना होगा। हमें स्वयं संस्कार बच्चों के हृदयरूपी थाली में परोसने होंगे। अब तक बाल साहित्य पर जो भी काम हुए है, जो भी अच्छा बाल साहित्य प्रकाशित हुआ है, उसे संग्रहित कर गाँव, शहर स्कूल–स्कूल तक सस्ते दामों पर उपलब्ध कराना होगा।

बच्चों में नैतिक मूल्यों का विकास करने के लिए बाल साहित्य एक अच्छा माध्यम है विशेषकर आज की परिस्थितियों में जब कोविड 19 जैसी महामारी ने पूरे विश्व मे पाँव पसार रखे है, बाल साहित्य और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। बचपन में हमारी दादी, नानी, माँ भी कहानी विधा के माध्यम से हमारे अंदर त्याग, समर्पण, सद्भावना और सहयोग जैसे गुणों का विकास करती आ रही हैं। बाल साहित्य का उद्देश्य न केवल हमारा मनोरंजन करना है, वरन हमारी भावी पीढ़ी में जीवन मूल्यों का विकास करना भी है।

श्री नारायण पंडित जी ने अपनी पुस्तक ''पंचतंत्र'' में कहानियों में पशु– पक्षियों को माध्यम बनाकर बच्चों को शिक्षा प्रदान की है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि बाल साहित्य के लेखक को बाल मनोविज्ञान से भली भाँति परिचित होना आवश्यक है। आज विभिन्न पत्रिकाओं में बाल साहित्य को प्रमुखता से स्थान दिया जाता है। पत्रिकाओं में अनेक भारतीय भाषाओं में ''चम्पक'' हिंदी में बाल हंस, बाल भारती, नन्हें सम्राट आदि प्रकाशित की जाती हैं। वर्तमान समय में विभिन्न समाचार पत्रों में भी ''बालकों का कोना'' बच्चों के लिए प्रकाशित किया जाता है जिसमें बाल प्रतिभा को विकसित किया जाता है।

उपासना कुमारी,
प्रभारी अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय लमहिचा,
विकास खण्ड–खजुहा,
जनपद–फतेहपुर।

परोपकार

रतनपुर नामक एक गाँव था। उस गाँव में रहने वाले परिवारों की संख्या बहुत थी। उस गाँव में शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न था। ज्यादातर लोग पढ़े–लिखे नहीं थे। वे सभी लोग अक्सर एक–दूसरे से छोटी–छोटी बातों पर विवाद करते रहते थे। सदाचार और परोपकार की बातें कभी नहीं करते थे। सदैव एक–दूसरे की बुराई ही किया करते थे।

इसी समय एक अंकित नामक लड़का अपने गाँव वापस आता है। अपने गाँव के लोगों के गलत व्यवहार और आचरण को देखकर वह बहुत दुखी हो जाता है। तब उसने निश्चय किया कि वह अपने गाँव के सभी लोगों को बेहतर शिक्षा देने का प्रयास करेगा जिससे कि वह सभी लोग अपना संस्कारी जीवन गुजार सकें। गाँव में किसी प्रकार का कोई विवाद ना हो, इसके लिए उसने सबको शिक्षा प्रदान करने का दृढ़ निश्चय किया।

अपने इस विचार को पूरा करने के लिए अंकित ने अपना यह कठिन कार्य करना अकेले ही प्रारंभ कर दिया। कुछ समय उसे गाँव के अनैतिक लोगों द्वारा बहुत ही बाधाएँ खड़ी की गईं और परेशान किया गया। किंतु अंकित के दृढ़ इच्छाशक्ति और नेक कार्य के आगे सभी झुक गए।

धीरे–धीरे एक दिन वह समय आ गया, जब गाँव के सभी लोग शिक्षा के महत्व को जानने लगे और शांतिपूर्वक एवं व्यवस्थित जीवन यापन करने लगे। सभी ग्रामवासी खुश होकर अंकित को शुभाशीष और आशीर्वाद प्रदान किया। सभी ग्रामवासियों ने मुक्त कंठ से अंकित की भूरि– भूरि प्रशंसा की। सभी ने एक स्वर से यही कहा कि अंकित ने अपने गाँव के लोगों को संस्कारी शिक्षा देकर बहुत बड़ा परोपकार किया है।

सीख– हमें परोपकार कर समाज की सेवा करनी चाहिए।

प्रतिमा उमराव,
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय अमौली(1–8),
विकास खण्ड– अमौली,
जनपद– फतेहपुर।

बाल जिज्ञासा

आसमान का रंग नीला क्यों होता है.?

क्या आप जानते हैं कि आसमान नीला क्यों दिखता है? अगर विज्ञान कि माने तो आकाश का कोई रंग नहीं है। जब हम अंतरिक्ष से पृथ्वी के आसमान को देखते हैं तो वह काला घुप्प दिखाई देता है लेकिन जब आसमान को पृथ्वी से देखते हैं तो वह नीला दिखाई देता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि पृथ्वी का वायुमंडल अलग-अलग गैसों के मिश्रण से बना है। इन गैसों के आलावा वायु में धूल के कण और अन्य सूक्ष्म पदार्थ भी शामिल होते हैं।

जब सूर्य का प्रकाश वायुमंडल में प्रवेश करता है तो वह वायुमंडल में मौजूद कणों से टकराता है। सूर्य से आने वाला प्रकाश कई तरंगो से बना होता है। इन तरंगो में अलग-अलग रंग होते हैं जैसे बैंगनी, आसमानी, नीला, हरा, पीला, नारंगी और लाल। जब सूर्य का प्रकाश किसी कण से टकराता है तो प्रकाश या तो कण के आर-पार हो जाता है अथवा उस कण द्वारा परवार्तित या बिखेर दिया जाता है। बिखरने वाले रंगों में बैंगनी, आसमानी, और नीला सबसे जादा बिखरते हैं क्योंकि इनकी तरंग-दैर्ध्य (वेवलेंथ) सबसे छोटी होती हैं जबकि हरा, पीला, नारंगी और लाल कम बिखरते हैं क्योंकि इनकी तरंग-दैर्ध्य सबसे लम्बी होती है। इसलिए सूर्य का लाल रंग बिना बिखरे पृथ्वी तक पहुँच जाता है लेकिन नीला रंग वायुमंडल में मौजूद गैस के अणु, धूल के कणों द्वारा बिखेर दिए जाते हैं और यह नीला प्रकाश बहुत देर तक वायुमंडल में बना रहता है। इस बिखरे नीले रंग के कारण हमें आसमान का रंग नीला दिखाई देता है। अब तो आप जान गए होंगे कि आकाश नीला क्यों दिखाई देता है।

अर्चना शर्मा

सहायक अध्यापिका

संविलियन विद्यालय - प्रेम विहार,

ब्लॉक-लोनी, जिला - गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

मुक्केबाजी

शिक्षण संवाद

यह बहुत ही प्राचीन खेलो में से एक है जिसे लगभग 688 ईसा पूर्व से ही खेला जा रहा है। मुक्केबाजी लड़ाई का खेल और एक मार्शल कला है जिसमें 2 लोग अपनी मुठ्ठियों का प्रयोग करके लड़ते हैं। यह खेल पुरुषों एवं महिलाओं दोनों के लिए होता है।

मुक्केबाजी से शरीर के रक्त परिसंचरण में सुधार होता है। इस खेल के माध्यम से शरीर का संतुलन बेहतर बना रहता है।

इस खेल में मुक्केबाज अपने प्रतिद्वंदी के सिर या धड़ पर मुक्के मारने की कोशिश करता है या अपने विरोधी को चकमा देते हुए चित्त करता है।

मुक्केबाजी में चोट से बचने के लिए मुक्केबाज सुरक्षा देने वाले दस्ताने को पहने रहता है। इस खेल में बेल्ट के नीचे या सिर के पीछे कहीं भी प्रतिद्वंदी को मारना मना होता है। इस खेल में दोनों ही मुक्केबाज सामान्यता सामान भार वाले ही होते हैं। पुरुषों और महिलाओं दोनों के ओलंपिक बॉक्सिंग मुकाबले में 3 मिनट के तीन राउंड होते हैं प्रत्येक राउंड के बाद 1 मिनट का ब्रेक भी दिया जाता है। लड़ाई का नियंत्रण एक रेफरी द्वारा किया जाता है जो रिंग के भीतर खिलाड़ियों के व्यवहार को परखते हैं तथा नॉक डाउन किए गए खिलाड़ियों को उठने का अवसर देने के लिए 10 सेकंड तक गिनती गिनते हैं।

जब लड़ाई के दौरान किसी खिलाड़ी को नीचे गिरा दिया जाता है तो रेफरी निर्धारण करता है कि खिलाड़ी ने विपक्षी के मुक्के के कारण अपने पैरों के अतिरिक्त शरीर के किसी

भी अन्य भाग से कैनवस के फर्श को स्पर्श किया है या स्वयं फिसल कर गिर गया है। रेफरी गिनती गिनना शुरु करता है अगर 10 तक की गिनती पूरी करने तक मुक्केबाज नहीं उठ पाता तो मुक्केबाज को नॉक आउट हो चुका मानकर दूसरे मुक्केबाज को विजयी घोषित कर दिया जाता है।

मुक्केबाजी को जीतने के तरीके–

1–जब एक मुक्केबाज अपने विरोधी को गिरा दे और विरोधी रेफरी द्वारा 10 सेकंड तक गिनती करने पर ना उठ सके तो मुक्केबाज जीत जाता है।

2– जब आपसी सहमति से चक्रों की पूर्व निर्धारित संख्या से पूर्व तक लड़ाई नहीं रुकती है तो विजेता का चुनाव रेफरी के निर्णय द्वारा अथवा निर्णायकों की अंकतालिकाओं के द्वारा कर दिया जाता है।

भारत में शौकिया मुक्केबाजी की उपस्थिति का पहला उदाहरण 1925 में देखा गया था जब मुंबई प्रेसिडेंसी एमेच्योर बॉक्सिंग फेडरेशन का गठन किया गया था।

भारत में मुक्केबाजी टूर्नामेंट का आयोजन करने वाला पहला शहर मुंबई था।

भारत में पहली बार राष्ट्रीय मुक्केबाजी चौंपियनशिप 1950 में मुंबई के ब्रेबोर्न स्टेडियम में आयोजित हुई थी। वैश्विक स्तर पर भारत शौकिया मुक्केबाजी के चार प्रमुख आयोजनों में भाग लेता है–

1–ओलंपिक
2–विश्व चौंपियनशिप
3–एशियन गेम्स
4–राष्ट्रमंडल खेल

भारत में पहली बार 1948 के लंदन ओलंपिक में हिस्सा लिया था। ओलंपिक पदक जीतने वाले पहले भारतीय मुक्केबाज विजेंदर सिंह थे। जिन्होंने 2008 बीजिंग ओलंपिक में पुरुषों के मिडिलवेट (75 किग्रा)वर्ग में कांस्य पदक जीता था। लंदन 2012 ओलंपिक कार्यक्रम में महिला मुक्केबाजी की शुरुआत की गई और भारतीय दिग्गज मुक्केबाज एमसी मैरीकॉम ने उस वर्ष भारत का दूसरा ओलंपिक मुक्केबाजी पदक जीता।

मैरी कॉम ने फ्लाईवेट (51 किग्रा) वर्ग में कांस्य पदक जीता था। मैरीकॉम महिला विश्व मुक्केबाजी चौंपियनशिप में सबसे सफल मुक्केबाज है। भारत के पाँच सर्वश्रेष्ठ भारतीय मुक्केबाज–

1– मैरी कॉम
2–विजेंद्र सिंह
3–हवा सिंह
4–सरिता देवी
5–डिंग्को सिंह

रवि मौर्य,
सहायक शिक्षक,
प्राथमिक विद्यालय चकबाकरपुर 2,
विकास खण्ड–हथगाम,
जनपद–फतेहपुर।

योग का महत्व

शिक्षण संवाद

योग, एक ऐसा शब्द जिससे समाज में हर व्यक्ति भली–भाँति परिचित हैं। योग शरीर मन और आत्मा के सामंजस्य की ओर एक पथ है। योग बहुत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक विषय है जो मनुष्य के शरीर और आत्मा के मध्य सामंजस्य बिठाने में सहायक है। वर्तमान समय में मनुष्य सांसारिक वस्तुओं के पीछे भागने की होड़ में अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं दे पा रहा और यही कारण है कि वह मानसिक रूप से भी शांति की अनुभूति नहीं कर पाता है जैसा कि कहा जाता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है। अगर मनुष्य मानसिक तनाव से मुक्ति चाहता है तो उसे अपने शरीर को स्वस्थ रखने की शुरुआत करनी होगी और यह शुरुआत व्यक्ति योग साधना के द्वारा कर सकता है। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा के दौर में मनुष्य के मन में एकाग्रता होना बहुत आवश्यक है और योगाभ्यास के जरिए हम अपने मन को एकाग्र रखते हैं। वर्तमान समय में हर व्यक्ति किसी न किसी कारणवश तनाव से घिरा हुआ है और जब तक यह तनाव मन से कम नहीं होगा व्यक्ति सहज महसूस नहीं कर पाएगा और मन को शांत करने में योग बहुत सहायक है।योग का उद्देश्य हमारे जीवन का समग्र विकास करना है या ऐसे कह सकते हैं कि जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। योग के द्वारा व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, नैतिक, आध्यात्मिक व सामाजिक विकास होता है। योग एक प्रकार से जीवन जीने की कला है। योग के द्वारा

हमारा शरीर स्वस्थ रहता है और व्यक्ति को निरोगता व कुविचारों से मुक्ति मिलती है और सुविचारों से व्यक्ति के अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण होता है। अच्छे व्यक्तित्व से जीवन उच्च व दिव्य बन जाता है। प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है कि वह एक आदर्श समाज का निर्माण करें और एक आदर्श समाज की स्थापना में योग की एक महत्वपूर्ण भूमिका है। योग मनुष्य को शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ बनाता है और एक स्वस्थ व्यक्ति ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकता है। आधुनिक समाज में मनुष्य धन कमाने तथा भौतिक संसाधनों को बटोरने तथा विलासिता पूर्ण जीवन बिताने में अपने शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य को भूलता जा रहा है पर आप खुद सोचिए जब शरीर स्वस्थ नहीं होगा और हम मानसिक रूप से प्रसन्न नहीं होंगे तो इन भौतिक संसाधनों का क्या फायदा? क्या हम अपने शरीर और मन को स्वस्थ रखने के लिए कुछ समय भी नहीं निकाल सकते? योग ना केवल हमारे शारीरिक व मानसिक विकास में सहायक है बल्कि हमारे नैतिक, सामाजिक विकास में भी सहायक है। आज के समय में जहाँ हर ओर प्रतिस्पर्धा है ऐसे समय में योगाभ्यास के द्वारा मानसिक एकाग्रता को बढ़ाया जा सकता है तथा अपनी कार्यकुशलता एवं कार्य क्षमता को भी बढ़ाया जा सकता है योग के सतत् अभ्यास से मनुष्य की मानसिक एकाग्रता तथा प्रतिरोधी क्षमता में वृद्धि होती है और इससे सामाजिक नैतिक एवं आर्थिक संपन्नता लाई जा सकती है। वर्तमान समय में पूरे देश में योग केंद्र संचालित किए जा रहे हैं। हम घर पर, विद्यालय में, योग केंद्रों में योगाभ्यास को अपने जीवन में ला सकते हैं और स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकते हैं।

ज़ेबा अतीक़,
सहायक शिक्षिका,
प्राथमिक विद्यालय बहरौली द्वितीय,
विकास खण्ड– मलवां,
जनपद– फतेहपुर।

ऑनलाइन शिक्षा- शिक्षा का बदलता स्वरूप

कोरोना काल ने शिक्षा व्यवस्था में आपदा में अवसर निकालने हेतु अनेक मौके दिए हैं इसी क्रम में विद्यालयों के बंद रहने के कारण बच्चों की शिक्षा में अत्यंत बाधाएँ आईं। इसे ही ध्यान में रखते वह ऑनलाइन शिक्षण हेतु कुछ एप्लीकेशन की सहायता से शिक्षण व्यवस्था को बच्चों तक पहुँचाने हेतु उपाय किया है। इसके लिए सिर्फ एक स्मार्टफोन की आवश्यकता है जोकि वर्तमान समय में लगभग हर घर में उपलब्ध है। इसके लिए मैं कुछ एप्स को उनकी प्रयोग विधि के साथ प्रस्तुत करना चाहती हूँ जिसके माध्यम से शिक्षण कार्य आसानी से किया जा सके –

इनमें से किसी भी एक एप्लीकेशन को अपने स्मार्टफोन में इंस्टॉल करें (इनमें मैंने गूगल मीट को सबसे उपयुक्त पाया) यह सभी एप्लीकेशंस मुफ्त उपलब्ध हैं गूगल मीट में दृश्य श्रव्य दोनों ही प्रकार से पढ़ाया जा सकता है साथ ही इसमें मोबाइल स्क्रीन को भी दर्शाया जा सकता है इसमें एक बार में 250 व्यक्तियों को जोड़ा जा सकता है। इसमें कक्षा में ही लिखित संदेश भेजने और इंटरनेट द्वारा यूट्यूब या अन्य उपयोगी वेबसाइटों को लाइव चला कर भी बच्चों को वीडियोस के माध्यम से अत्यंत रुचिकर तरीके से पढ़ाया जा सकता है। यह ऐप फिलहाल पूरे विश्व में ऑनलाइन शिक्षा हेतु अत्यधिक मात्रा में प्रयोग किया जा रहे हैं जिससे बच्चों की पढ़ाई में बाधा नहीं आ रही है साथ ही विद्यालय स्वयं ही घर–घर तक अपनी पहुँच बना पा रहे हैं।

यह एप्लीकेशन भी प्ले स्टोर पर मुफ्त उपलब्ध है यह पूर्णतया एक डिजिटल श्वेत पटल की तरह कार्य करता है साथ ही इसमें विभिन्न प्रकार के रंगों का भी प्रयोग किया जा सकता है इसे गूगल मीट पर अपने स्क्रीन को शेयर करके एक श्वेत पटेल की भाँति पढ़ाया जा सकता है। इसमें विभिन्न प्रकार के रंगों के प्रयोग से बच्चे अत्यंत रुचि से पढ़ेंगे साथ ही इसमें पढ़ाई हुए पृष्ठों को सुरक्षित रखने का भी विकल्प होता है जिसे उन बच्चों को भेजा जा सकता है जो किसी कारणवश कक्षा में उपस्थित नहीं हो पाए।

यह एप्लीकेशन भी प्ले स्टोर पर पूर्णतया निशुल्क उपलब्ध है। इसका प्रयोग बच्चों की पुस्तकों को स्कैन करके अथवा उनका पीडीएफ डाउनलोड करके स्क्रीन दर्शाते हुए बच्चों को किताबों के माध्यम से भी पढ़ाया जा सकता है। जैसा कि हम जानते हैं आवश्यकता ही आविष्कार की जननी होती है साथ ही आपदाएँ भी नए–नए अवसर बनाती हैंद्य इस कोरोना काल ने हमें ऐसे ही कई अवसर दिए हैं। हम समय को तो नहीं रोक सकते लेकिन उपलब्ध संसाधनों से ही विभिन्न उपायों द्वारा समय का सही से प्रयोग कर सकते हैं। इस आपदा ने मुझे इसी प्रकार अवसरों को ढूँढने हेतु प्रोत्साहित किया। इसी क्रम में यह मेरा एक छोटा सा प्रयास है। इस छोटे से प्रयास से मेरा ध्येय है–

''कोरोना काल में विद्यालय आपके द्वार''

अंजली मिश्रा,
सहायक शिक्षिका,
प्राथमिक विद्यालय टिकरा,
विकास खण्ड– देवमई, जनपद– फ़तेहपुर।

सदविचार

सरोजिनी नायडू के सद्विचार

शिक्षण संवाद

सरोजिनी नायडू का जिक्र आते ही एक ऐसी महिला की छवि उभरकर सामने आती है जो कई भाषाओं में महारत रखती थीं। जिनकी लिखी कविताएँ हर तरफ धूम मचाती थीं, जिनकी सुरीली आवाज की वजह से महात्मा गांधी ने उन्हें ''भारत कोकिला'' की उपाधि दी थी। सरोजिनी नायडू की छवि केवल यहाँ तक ही सीमित नहीं है बल्कि स्वतंत्रता सेनानी के तौर पर भी उनकी छवि काफी अहम रही थी।

''भारत की गाने वाली चिड़िया'', ''भारत कोकिला'' सरोजिनी नायडू का जन्म 13 फरवरी 1879 ई० को हैदराबाद में हुआ था। पिता अधोर नाथ चटोपा्याय तथा माता वरदासुंदरी की कविता लेखन में विशेष रुचि थी। सरोजिनी को अपने माता–पिता से कविता सृजन की प्रेरणा मिली। सरोजिनी बचपन से ही बुद्धिमान थीं। उन्होंने 12 वर्ष की छोटी आयु में ही बारहवीं की परीक्षा अच्छे अंकों के साथ पास कर ली थी। 13 वर्ष की आयु में ''लेडी ऑफ दी लेक'' नामक कविता रच दी थी। उनके पहली कविता संग्रह का नाम ''गोल्डन थ्रैशोल्ड'' था। सरोजिनी की कविता ''बर्ड ऑफ टाइम'' तथा ''ब्रोकन विंग'' ने उन्हें एक सुप्रसिद्ध कवयित्री बना दिया।

वे कहा करतीं थीं– ''देश को गुलामी की जंजीरों में जकड़ा देखकर कोई भी ईमानदार व्यक्ति बैठकर केवल गीत नहीं गुनगुना सकता है। कवयित्री होने की सार्थकता इसी में है कि संकट की घड़ी में, निराशा और पराजय के क्षणों में आशा का सन्देश दे सकूँ।''

उन्होंने अशिक्षा, अज्ञानता और अन्धविश्वास को दूर करने के लिए लोगों से अपील (निवेदन) की । उनका कहना था कि ''देश की उन्नति के लिए रूढियों, परम्पराओं, रीति–रिवाजों के बोझ को उतार फेंकना होगा।''

सरोजिनी नायडू अद्भुत वक्ता थीं। ये बोलना शुरू करती तो लोग उनके धारा प्रवाह भाषण को मन्त्र–मुग्ध होकर सुनते थे। उनके भाषण स्वतंत्रता की चेतना जगाने में जादू का काम करते थे।

सरोजिनी नायडू के कुछ अन्य सद्विचारः–

1. हम अपनी बीमारी से भारत को साफ करने से पहले पुरुषों की एक नई नस्ल चाहते हैं।
2. एक देश की महानता,बलिदान और प्रेम उस देश के आदर्शों पर निहित है।

3. हम गहरी सच्चाई का मकसद चाहते हैं, भाषण में अधिक से अधिक साहस और कार्यवाही में ईमानदारी।
4. ''श्रम करते हैं हम कि समुद्र हो तुम्हारी जागृति का क्षण, हो चुका जागरण अब देखो, निकला दिन कितना उज्ज्वल।''
5. यदि आप मजबूत हैं, तो आपको कमजोर लड़के या लड़की को खेलने और काम में दोनों में इनकी मदद करनी होगी।

सरोजिनी नायडू की जब 2 मार्च सन् 1949 को मृत्यु हुई तो उस समय वह राज्यपाल के पद पर ही थीं। लेकिन उस दिन मृत्यु तो केवल देह की हुई थी। अपनी एक कविता में उन्होंने मृत्यु को कुछ देर के लिए ठहर जाने को कहा था....

मेरे जीवन की क्षुधा,
नहीं मिटेगी जब तक
मत आना हे मृत्यु!
कभी तुम मुझ तक।

मिहिर यादव,
सहायक अध्यापक(विज्ञान),
कंपोजिट उच्च प्राथमिक विद्यालय पाण्डेयपुर,
विकास खण्ड–मुंगराबादशाहपुर,
जनपद–जौनपुर।

कंकड़ का प्रयोग

नवाचार नए विचारों की शुरुआत है। नवाचार एक तकनीकी प्रक्रिया है। नवाचारों के द्वारा हम अपने पाठ को बहुत ही रोचक बना सकते हैं जिससे बच्चों में पाठ के प्रति रुचि बढ़ेगी और वह बड़ी ही आसानी से अपने पाठ को सीखने में रुचि भी लेंगे। कक्षा शिक्षण हेतु नवाचार बहुत ही उपयोगी सिद्ध होता है। इसके द्वारा बच्चों के व्यक्तित्व में विकास होता है, किसी पुरानी चीज को हम नवाचार के जरिए नए तरीके से प्रस्तुत करते हैं तो वह बच्चों में उत्साह का संचार करती है और सीखने की ओर लालायित करती है। इसी के चलते आज हम कक्षा शिक्षण में नवाचार का प्रयोग कर बच्चों का ध्यान विषय की ओर केन्द्रित करते हैं और हर संभव सिखाने में हम कामयाब होते हैं। कक्षा शिक्षण में नवाचार की अहम भूमिका है।
विधिः— मेरे विद्यालय में दिव्यांग शौचालय हेतु मौरम आई थी उसमें से मैंने अपने बच्चों के द्वारा सुंदर–सुंदर कंकड़ निकलवाए और उन कंकड़ों को मैंने अपने बच्चों को गिनती सिखाने हेतु प्रयोग किया। बच्चों में वैसे भी परिवेशीय वस्तुओं के प्रति लगाव होता है। सभी ने बहुत ही रुचि पूर्वक उन कंकड़ों को इकट्ठा कर उनका प्रयोग गिनती, जोड़, घटाव और पहाड़ों में भी किया।

लाभः— इन एकत्रित कंकड़ों के द्वारा हमारे बच्चों को बहुत हद तक लाभ मिला। इन कंकड़ों का प्रयोग कई प्रकार से किया गया मेरे विद्यालय के ही एक बच्चे ने कहा मैम अगर इन कंकड़ों को रंग दे तो फिर क्या? मैंने उस बच्चे के लिए सभी बच्चों से तालियाँ बजवायी और कंकड़ों को बच्चों के साथ मिलकर हर रंग से रंग कर दिया। उनका प्रयोग मेरे बच्चों द्वारा रंगों को पहचानने में भी किया जाता है। इस प्रकार यह नवाचार मेरे बच्चों के लिए बहुत ही लाभकारी सिद्ध हुआ।

सभी में अनख जगाना है
नवाचार अपनाना है।

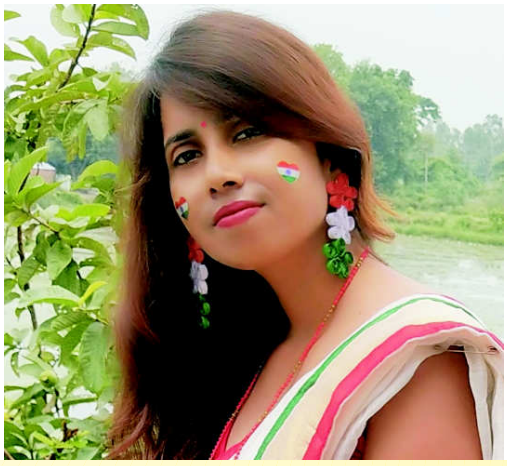

कल्पना गौतम,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय जगदीशपुर,
विकास खण्ड–देवमई,
जनपद–फतेहपुर।

गतिविधि

अक्षर ज्ञान कराना

शिक्षण संवाद

कक्षा– 1 व 2
उद्देश्य– बच्चों को रोचक तरीके से अक्षर ज्ञान कराना
सामग्री– अक्षर काड्र्स
गतिविधि–

बच्चों को गोलाकार में बैठाकर एक बच्चे से अक्षर कार्ड सभी बच्चों में बँटवा देंगे। सभी बच्चों को अपने–अपने अक्षर कार्ड ध्यान से देखने के लिए कहेंगे। उसके बाद क्रमशः एक–एक अक्षर बोलते जाते हैं और जिस बच्चे के पास वह अक्षर कार्ड होगा, वह उस अक्षर को गोले में रखता जाएगा। इस तरह सभी अक्षरों को गोले में रखेंगे। जो बच्चा बोले गए अक्षर को नहीं पहचान पाता उसकी मदद के लिए श्यामपट्ट पर उस अक्षर को लिखकर बच्चों से अपने कार्ड देखने को कहेंगे, जिसके पास उस अक्षर का कार्ड होगा, वह अक्षर कार्ड रख देगा। इस तरह गतिविधि को आगे बढ़ाते जाएँगे।

अनुपमा यादव,
सहायक अध्यापक,
प्राथमिक विद्यालय जिरसमी प्रथम, विकास क्षेत्र–शीतलपुर,
जनपद–एटा।

मिशन शिक्षण संवाद

डिस्क्लेमरः— मिशन शिक्षण संवाद की मासिक पत्रिका शिक्षण संवाद बेसिक शिक्षा के शिक्षकों का आपसी सीखने—सिखाने का स्वैच्छिक और स्वयंसेवी साझा प्रयास है। इस पत्रिका में अनमोल रत्न शिक्षकों के विवरण, शिक्षकों के लेखों, बाल कविताओं, बाल कहानियों से लेकर महापुरुषों के विचार, अधिकारीगण के लेख और सामान्य ज्ञान के प्रश्न भी सम्मिलित हैं। इस पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख, कविता की मौलिकता और तथ्यात्मकता के लिए सम्बंधित स्तम्भकार उत्तरदायी होगा। यद्यपि पत्रिका में प्रकाशित सभी स्तम्भों में उच्चकोटि की गुणवत्ता का ध्यान रखा गया है तथापि किसी भी तथ्य के लिए संपादक मंडल दावा नहीं करता है। किसी भी सुझाव या शिकायत के लिए मिशन के ईमेल shikshansamvad@gmail.com या व्हाट्सएप्प नम्बर—9458278429 पर सम्पर्क कर सकते हैं।

1. फेसबुक पेजः http://m.facebook.com/shikshansamvad/
2. फेसबुक समूहः http://www.facebbook.com/groups/118010865464649
3. मिशन शिक्षण संवाद ब्लॉगः https://www.shikshansamvad.blogspot.in
4. ट्विटर एकाउण्टः https://twitter.com/shikshansamvad
5. यू—टयूबः https://www.youtube.com/channel/UCPbbM119CQuxLymELvGgPig
6. व्हाट्सएप नं0 : 9458278429
7. ई मेलः shikshansamvad@gmail.com
8. टेलीग्रामः https://t.me/missionshikshansamvad
9. वेबसाइटः www.missionshikshansamvad.com

विमल कुमार

मिशन शिक्षण संवाद